मनोहर लाल खट्टर

भारतीय जनता पार्टी

अबकी बार भाजपा सरकार

जन सेवा पर समर्पित एक जीवन

राष्ट्रीय स्वंयसेवक संघ और भारतीय जनता पार्टी में अपने चालीस साल के सक्रिय और समर्पित सार्वजनिक जीवन की पृष्ठभूमि में मनोहर लाल खट्टर ने अथक रूप से हरियाणा और देश की सेवा की है। वर्षों से अपनी कर्मभूमि हरियाणा के साथ घनिष्ठ और अभिन्न रूप से जुड़े मनोहर लाल अपनी दूरदृष्टि और राजनीतिक बोध के लिए जाने जाते हैं। इस लम्बी अवधि में राज्य की राजनीति और लोगों के विषय में उनकी जमीनी जानकारी उनकी ताकत रही है।

अपनी राजनीतिक कुशाग्रता के लिए माने जाने वाले मनोहर लाल ने विभिन्न चुनाव अभियानों में एक मुख्य रणनीतिकार की भूमिका अदा की है। नवीनतम उदाहरण है 2014 में हुए हरियाणा के संसदीय चुनाव, जिसमें उन्होंने चुनाव समिति के अध्यक्ष की हैसियत से पार्टी को अभूतपूर्व सफलता दिलाई। दृश्य के पीछे से बार बार की गयी उनकी अहम् और सटीक भूमिका ने उन्हें एक कर्तव्यनिष्ठ, संगठनात्मक कौशल युक्त और दृढ़ता से काम लेने वाले व्यक्ति की ख्याति प्रदान की है। उन्होने अनेक सामाजिक परियोजनाओं और मानवीय प्रयासों को भी नेतृत्व प्रदान किया है। समय के साथ-साथ चलने वाले वह एक ऐसे व्यक्ति हैं जो नित बदलते समय में नयी तकनीकों का उपयोग प्रभावी संचार के लिए करने में कोई संकोच नहीं करते।

आजीवन अविवाहित रहने का निर्णय लेने वाले मनोहर लाल ने अपना निजी जीवन पूर्णतः सामाजिक कार्यों पर न्योछावर कर दिया है। उनका जीवन पूर्णरूप से राष्ट्र को निःस्वार्थ सेवा भावना के साथ समर्पित है। निजी स्वार्थों से रहित उनकी छवि बेदाग और स्वच्छ है।

अपनी जड़ों से जुड़े हुए तथा भारतीय संस्कृति और परम्पराओं की शक्ति पर अथाह विश्वास रखने वाले मनोहर लाल, राजनीति को लोगों के जीवन को बेहतर बनाने का साधन मात्र मानते हैं।

उनका दृढ़ विश्वास है कि एक नेता का दूरदर्शी होना आवश्यक है। ऐसा नेता जो लोगों को प्रेरित कर सके और समाज में परिवर्तन ला सके। अपने स्वंयसेवक होने के गर्व को सीने से लगाये, उन्होंने सदैव पार्टी द्वारा सौपें गए हरेक दायित्व का पालन निष्ठापूर्वक किया है।

मनोहर लाल की प्राथमिकता न सिर्फ एक बेहतर

एक मुख्य रणनीतिकार और अपनी राजनीतिक कुशाग्रता के लिये ज्ञात मनोहर लाल को 2014 के लोक सभा चुनाव में हरियाणा चुनाव समिति का अध्यक्ष नियुक्त किया गया।

आजीवन अविवाहित रहने का निश्चय करने वाले मनोहरलाल ने 34 वर्ष पूर्व अपने घर का त्याग कर अपना जीवन राष्ट्र और समाज के लिए समर्पित कर दिया।

हरियाणा बनाने की है, बल्कि उस अद्वितीय हरियाणा के निर्माण की है, जिसका एक उत्कृष्ट उदाहरण के रूप में दूसरे राज्य अनुसरण करें। उनके अनुसार इस हरियाणा का गौरव तभी बढ़ाया जा सकता है जब हरियाणा के लोग जात-पात और अन्य सभी समाजिक एवं आर्थिक भेदभाव को भुला कर एक होकर कार्य करें।

राजनितिक यात्रा

हरियाणा में जन्में मनोहर लाल खट्टर 1980 में एक पूर्ण समर्पित स्वंयसेवक के रूप में राष्ट्रीय स्वंयसेवक संघ से जुड़े। चौदह वर्षों की सेवा के पश्चात मनोहर लाल भारतीय जनता पार्टी में भेजे गए और 1994 में उन्हें अपने राज्य हरियाणा के संगठन मंत्री की जिम्मेदारी सौंपी गयी।

अपने इस पद पर रहते हुए उन्होंने हरियाणा की राजनीति में कई उतार चढ़ाव देखे। 1996 में बीजेपी ने बंसीलाल की हरियाणा विकास पार्टी से गठजोड़ कर राज्य में सरकार बनाई परन्तु जब ऐसा महसूस किया गया कि सरकार की लोकप्रियता गिर रही है और गठबंधन महंगी साबित हो रही है तो उन्होंने सरकार से समर्थन वापस लेने पर जोर दिया। तत्पश्चात बीजेपी ने ओम प्रकाश चौटाला की सरकार को बाहर से समर्थन देने का फैसला किया। बाद में इंडियन नेशनल लोक दल के साथ बीजेपी के इस गठबंधन को 1999 के संसदीय चुनावों में 10 की 10 सीटें मिली। जबकि 1998 में बंसीलाल की पार्टी के साथ गठबंधन में उन्हें 10 में 2 सीटें ही मिली थी। मनोहर लाल की कुशल रणनीति का यह एक उदाहरण मात्र है।

मनोहर लाल के हरियाणा के संगठन महामंत्री के कार्यकाल ने उन्हें एक ऐसे श्रेष्ठ रणनीतिकार और योग्य तथा दृढनिश्चयी संगठक के रूप में स्थापित किया जिसे हरियाणा की राजनीति की गूढ़ समझ है। 1996-2001 के दौरान जब मनोहर लाल सक्रिय रूप से हरियाणा में कार्यरत थे और नरेंद्र मोदी जी हरियाणा के केंद्रीय प्रभारी थे, उन्ही दिनों इन दोनों को एक साथ काम करने और एक-दूसरे की कार्यशैली को समझने का अवसर मिला । 2002 में मनोहर लाल को जम्मू और कश्मीर के राज्य चुनाव का प्रभार सौंपा गया।

भुज के भूकम्प के बाद मोदी जी ने कच्छ जिले के चुनाव के प्रबन्धन की जिम्मेदारी मनोहर लाल को सौंपी।

समाज के उपेक्षित वर्ग के लिए उनकी संवेदनशीलता उनके स्वंय के विनम्र और सामान्य पृष्ठभूमि की उपज है।

उस समय उस क्षेत्र में अपर्याप्त आपदा प्रबंधन और राहत सामग्री को लेकर लोगों में काफी आक्रोश था। परन्तु अंततः मनोहर लाल की कड़ी मेहनत और व्यवहार कुशल चुनाव अभियान के संचालन का फल मिला और कच्छ जिले की 6 में से 3 सीटें बीजेपी ने जीती। मोदी जी ने तब मनोहर लाल को शाबाशी देते हुए कच्छ में जीती इन सीटों को बीजेपी के लिए बोनस बताया था।

नवनिर्मित राज्य छत्तीसगढ़ में हुए चुनाव में भी मनोहर लाल का बहुमूल्य योगदान रहा। उनके बस्तर में किये गए कठिन मेहनत का ही परिणाम था की नक्सल प्रभावित इस क्षेत्र में, जो परम्परागत रूप से कांग्रेस पार्टी का गढ़ माना जाता था, बीजेपी ने 12 में से 10 सीटों पर विजय प्राप्त की। राज्य की राजनीति में बीजेपी के वर्चस्व स्थापित करने में बस्तर के विजय ने एक निर्णायक भूमिका निभायी।

विभिन्न राज्यों में पार्टी की जीत में मनोहर लाल के महत्वपूर्ण योगदान के फलस्वरूप उन्हें तत्कालीन चुनाव सहायक योजना के प्रमुख और राष्ट्रीय रूप से विख्यात आर॰ एस॰ एस॰ विचारक बाल आप्टे के साथ में काम करने का अवसर प्राप्त हुआ और दिल्ली एवं राजस्थान सहित 12 राज्यों का प्रभार उन्हें सौंपा गया।

इसके तुरंत बाद मनोहर लाल पाँच राज्यों - जम्मू और कश्मीर, पंजाब, हरियाणा, चंडीगढ़ और हिमाचल प्रदेश के क्षेत्रीय संगठन महामंत्री नियुक्त किये गये। उनके इस कार्यकाल के दौरान पार्टी को कई सफलताएँ प्राप्त हुई। इसी दौरान बीजेपी ने जम्मू और कश्मीर में पहली बार 11 सीटें जीती। 2014 के लोक सभा चुनावों में एक बार फिर मनोहर लाल को हरियाणा के चुनाव अभियान समिति का अध्यक्ष नियुक्त किया गया और एक बार फिर उन्होंने पार्टी की जबरदस्त सफलता और राष्ट्र के इतिहास की धारा के परिवर्तन में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी।

वे दृढ़ता से काम लेने वाले और व्यवहारिक दृष्टिकोण वाले एक ऐसे व्यक्ति हैं, जिनकी संगठनात्मक कुशलता सर्वविदित है।

बीजेपी और आर॰एस॰एस॰ के साथ अपने लगभग 40 वर्षों के समर्पित सार्वजनिक जीवन में मनोहर लाल खट्टर ने अथक रूप से हरियाणा और राष्ट्र की सेवा की है।

सेवा प्रथम

समाज के उपेक्षित वर्ग के लिए मनोहर लाल की संवेदनशीलता उनके स्वंय के साधारण पृष्ठभूमि की उपज रही है। देश को प्रभावित करने वाले विभिन्न सामाजिक मसलों के प्रति वह पूरी तरह जागरूक हैं तथा उन्होंने सक्रिय रूप से सामाजिक कार्यों में अपनी सेवायें, पार्टी और निजी, दोनो स्तरों पर पूर्ण रूप से समर्पित की हैं।

पार्टी और व्यक्तिगत दोनों माध्यमों से वे एक स्वंयसेवक के रूप में समाज सेवा से संबद्ध रहे हैं ।

मनोहर लाल ने पार्टी की अंत्योदय योजना का भी राष्ट्रीय स्तर पर नेतृत्व किया है, जिसके अन्तगर्त समाज के सबसे निचले स्तर पर स्थित लोगों के उत्थान और विकास की विचारधारा निहित है।

उनका ध्यान हमेशा बचाव और पुनर्वास जैसे आवश्यक सामाजिक मुद्दों पर रहा है। उदाहरण के तौर पर 1978 के दौरान दिल्ली में द्वारका के निकट ककरोला गाँव में आयी बाढ़ के समय सहायता के प्रयासों में उनका नेतृत्व उल्लेखनीय रहा है।

रोहतक ने भी उनके प्रचारक काल के दौरान भीषण बाढ़ का सामना किया जहां बाढ़ ने व्यापक क्षति पहुँचाई और अनेकों को बेघर कर दिया। मनोहर लाल ने आपदा की इस घड़ी में लोगो के लिए भोजन और सुरक्षा सुनिश्चित करने के प्रयासों का सफलतापूर्वक नेतृत्व किया।

जम्मू और कश्मीर की उड़ी और पुंछ जिलों के भूकम्प के दौरान भी जिसमें प्रकृति ने पूरे प्रभावित क्षेत्र को तहस नहस कर दिया था, एक बार फिर मनोहर लाल पूरे बचाव अभियान में लगातार शामिल रहे और पीड़ितों को बाहर निकलने तथा उनके भोजन, आवास और पूर्णवास जैसे सहायता के प्रयासों को संचालित किया।

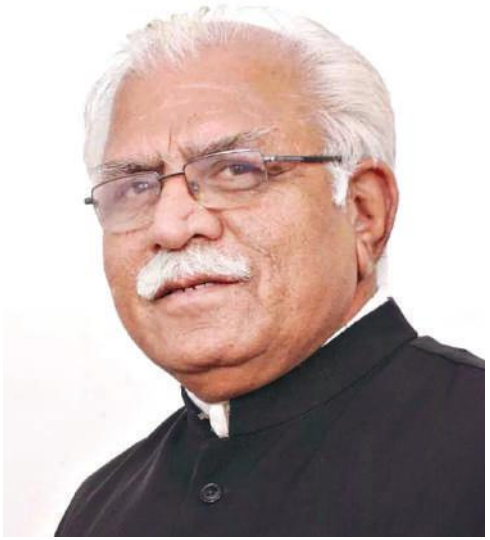

उनका सपना एक एकीकृत, शक्तिशाली , प्रगतिवादी, और संपन्न हरियाणा की संरचना है, जहाँ सभी का विकास हो ।

व्यक्तिगत जीवन

मनोहर लाल की जड़ें पश्चिमी पंजाब के, जो अब पाकिस्तान में है, एक सामान्य परिवार से जुड़ी हुई हैं। 1947 बँटवारें के दौरान हुई हिंसा में उनके परिवार को अपना घर छोड़ना पड़ा और उन्होंने खाली हाथ हरियाणा के रोहतक जिले के निन्दाना गाँव में शरण ली। अपने परिवार के अस्तित्व की रक्षा और जीवन यापन के लिए उनके दादा और पिता ने मजदूरी जैसे कामो में जी तोड़ मेहनत की और अंततः इतना बचा लिया की एक छोटी सी दुकान खोली जा सके।

इसी निन्दाना में मनोहर लाल का जन्म 1954 में हुआ। जैसे ही उनकी दुकान थोड़ी चल निकली, मनोहर लाल के पिता ने पड़ोस के गाँव बनयानी में बसने का फैसला किया। वहां उन्होंने कृषि योग्य भूमि खरीदी और खेती शुरू की।

मनोहर लाल ने 6 साल की उम्र में स्कूल जाना शुरू किया और जल्द ही उन्होंने अपनी प्रखर प्रतिभा का परिचय देना शुरू कर दिया। पढ़ाई में उत्कृष्टता के साथ साथ वह हमेशा वाद-विवाद, चर्चाओं और विद्यालय की अन्यान्य गतिविधियों में भी अग्रणी रहे।

प्रारम्भ में मनोहर लाल एक डाक्टर बनना चाहते थे। अपने पिता के इच्छा के विरुद्ध, जो उन्हें अपने पारिवारिक कृषि के क्षेत्र में रखना चाहते थे, उन्होंने विभिन्न कालेजों में आवेदन देना शुरू किया। उन्होंने अपनी माँ के बचाये हुए रुपए लेकर रोहतक के नेकी राम शर्मा गवर्नमेंट कालेज में दाखिला लिया। मनोहर लाल अपने परिवार में पहले व्यक्ति थे जिसने दसवीं कक्षा के ऊपर पढ़ाई जारी रखी। इसी दौरान उन्होंने मेडिकल कालेजों के प्रवेश की परीक्षा तैयारी के लिए दिल्ली का रुख किया। इसी एक घटना ने घटनाओं की ऐसी श्रृंखला को जन्म दिया, जिसने मनोहर लाल के पूरे जीवन को बदल कर रख दिया।

दिल्ली में वे अपने एक रिश्तेदार के घर में ठहरे जो वहां कपड़ें के एक सफल व्यापारी थे। उन्हें देखकर मनोहर लाल ने अपने स्वंय के उस निर्णय पर प्रश्नचिन्ह लगाना शुरू कर किया जिसमें उन्हें डाक्टर बनने के लिए 7 से 9 साल की पढ़ाई करनी थी। उनका ध्यान अब व्यापार की ओर आकर्षित हुआ। बस फिर क्या था, उन्होंने अपने परिवार से कर्ज लेकर दिल्ली के सदर बाजार के निकट एक दुकान खोली। उनकी कड़ी मेहनत और दृढ़ संकल्प रंग लायी और उन्होंने अपनी छोटी सी दुकान को एक सफल उद्यम में बदल कर रख दिया। मनोहर लाल ने न सिर्फ अपने माता-पिता से लिए हुए पैसे ही वापस लौटाए, बल्कि अपनी बहन की शादी भी करवाई। साथ ही उन्होंने अपने दो छोटो भाइयों को भी अपने साथ रहने के लिए दिल्ली बुलवा लिया। इसी बीच उन्होंने अपनी ग्रेजुएशन की पढ़ाई भी दिल्ली विश्वविद्यालय से पूरी की और साथ-साथ आपने व्यापारिक गतिविधियों का संचालन भी सफलतापूर्वक जारी रखा। लेकिन नियति थी, कि फिर से उनके जीवन को एक नयी राह की ओर ले जा रही थी।

26 जून 1975 का काला दिन - देश पर इमरजेंसी लादी गयी। 21 साल की युवा उम्र में मनोहर लाल का ध्यान पहली बार राष्ट्रीयता, एकता, राजनीति जैसे विषयों पर गया। अब यकायक उन्होंने अपने और अपने

"राजनीति लोगो के जीवन में परिवर्तन लाने का एक साधन है"

मनोहर लाल खट्टर

"जीवन स्वंय के लिए नहीं, वरन समाज के लिए जीने का नाम है"

मनोहर लाल खट्टर

आस-पास के निजी परिवेश से परे, महत्वपूर्ण राष्ट्रीय एवं सामाजिक विचारों का मनन करना शुरू किया। यहीं पर पहली बार वे राष्ट्रीय स्वंयसेवक संघ के संपर्क में आये।

जब उन्होंने आर॰एस॰एस॰ के स्वंयसेवकों को अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के लिए विरोध करते, सत्याग्रह करते, गिरफ्तारी देते और भारत माता के लिए नारे लगाते देखा, तब उन्हें यह अनुभव हुआ कि अगर ये लोग निःस्वार्थ भाव से अत्याचार सहने और नुक्सान उठाने के लिए तैयार है तो उनका मकसद निश्चित रूप से अच्छा है। इन्ही विचारों और आस्थाओं के साथ 1977 में 24 वर्ष की आयु में वे आर॰एस॰एस॰ में शामिल हुए।

जनवरी, 1979 में उन्हें प्रयाग (इलाहाबाद) में विश्व हिन्दू परिषद के एक विशाल सम्मलेन में शामिल होने का अवसर मिला। यहाँ उन्होंने अनेक ज्ञानी संतो और हिन्दू समाज के बुद्धिजीवियों से कुंभ के मेले के दौरान पारस्परिक विचार विमर्श किया। इसी स्थान में जब एक दिन सुबह की पहली किरण के साथ उन्होंने पवित्र त्रिवेणी संगम का दर्शन किया तो यहीं से उनके जीवन में एक और नया मोड़ आया।

यहीं पर उन्होंने अनुभव किया कि जीवन सिर्फ स्वंय के लिए जीने का नाम नहीं, वरन यह सम्पूर्ण राष्ट्र की थाती है। यहीं उन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन राष्ट्र कल्याण हेतु अर्पित किया। परिणामस्वरुप मनोहर लाल ने अपना जीवन आर॰एस॰एस॰ के एक पूर्णकालिक प्रचारक के रूप में समर्पित कर डाला। उनके इस उत्साह और समर्पण की भावना के कारण संघ में स्नैः स्नैः परन्तु लगातार उन्हें नयी नयी जिम्मेदारियाँ सौपी जाती रही।

लेकिन यह सब कुछ उनके परिवार ने उनके विषय में कभी नहीं सोचा था और इसलिए प्रारम्भ में उन्हें अपने परिवार के भारी विरोध का सामना करना पड़ा। उनका परिवार अपने ज्येष्ठ पुत्र से एक परंपरागत और सामान्य जीवन जीने की अपेक्षा रखता था, जिसमे सांसारिक समृद्धि और बाल बच्चों वाला एक परिवार होता। किन्तु मनोहर लाल तो अब किसी और ही सांचे में ढल चुके थे। स्वंय के लिए जीने की अपेक्षा, वे तो देश और देशवासियों के लिए जीना चाहते थे। समर्पण की भावना ने उनके मन में घर कर लिया था और अब वापस लौटने की कोई सम्भावना नहीं थी। यहाँ से उस पथ पर अब सिर्फ आगे ही आगे जाना था...

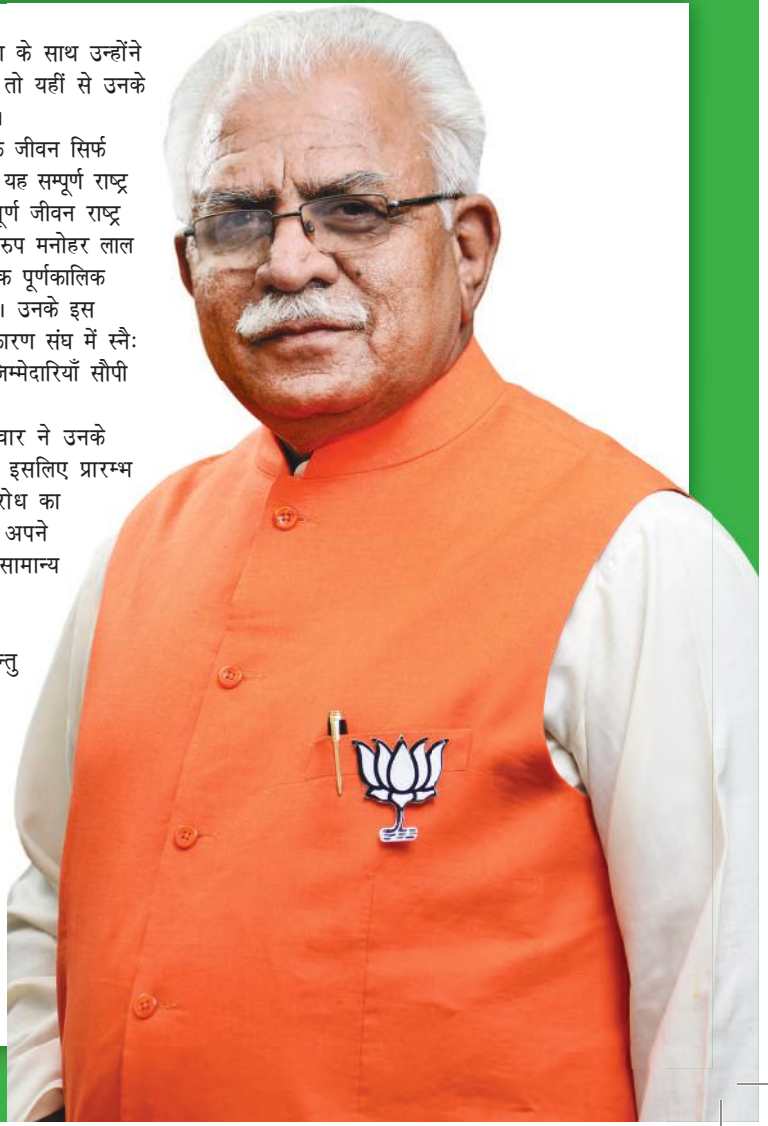

मनोहर लाल खट्टर

सदस्य, राष्ट्रीय कार्य समिति
भारतीय जनता पार्टी

Mobile: +91 98682 54075
Email: contact@manoharlalkhattar.in

www.facebook.com/manoharlalkhattar
www.twitter.com/bjpmlal
www.manoharlalkhattar.in
+91 95608 31117